महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल, गुजरात एवं मध्यप्रदेश का लोकप्रिय समाचार पत्र

RNI No. MAHHIN/2013/49425
डाक पंजीयन सं. MNW/251/2016-2018
e-paper : www.srushtiagronews.com

Posted at Malad NDPO Dated of Posting
4th to 5th for (1st to 15th issue)
18th to 19th for (16th to 30th issue)

ग्रामीण विकास का सम्पूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

सृष्टि एग्रो

वर्ष -5 | अंक-12 | मुंबई, 16 से 31 जुलाई 2017 | मूल्य - 2 रुपए | पृष्ठ - 8

कपास पर फिदा हुए किसान

सुरेश शर्मा

मुंबई। देश में कपास की बेहतरीन बुआई हुई है। खरीफ सीजन में सबसे ज्यादा कपास की बुआई हुई है। देशभर में 46.10 लाख हेक्टेयर में कपास की बुआई हुई जो पिछले साल से करीब 142 फीसदी अधिक है। सबसे ज्यादा कपास की बुआई 18.87 लाख हेक्टेयर महाराष्ट्र में हुई है जो पिछले साल से 6.51 लाख हेक्टेयर अधिक है। इस साल मॉनसून पूर्व बारिश अच्छी होने की वजह से कपास की अधिक बुआई हुई है। केंद्रीय कृषि विभाग द्वारा जारी किए गए आंकड़ों के मुताबिक देशभर में कपास की बुआई 47.10 लाख हेक्टेयर में हुई जबकि पिछले साल जून महीने में 19.07 लाख हेक्टेयर में बुआई हुई थी। अर्थात पिछले साल के साथ सामान्य रकबे से भी ज्यादा जून महीने में कपास की बुआई हुई है। इस साल पिछले साल की अपेक्षा महाराष्ट्र में 6.51 लाख हेक्टेयर, तेलंगाना में 3.16 लाख हेक्टेयर, राजस्थान में 1.06 लाख हेक्टेयर, हरियाणा में 0.86 लाख हेक्टेयर, मध्य प्रदेश में 0.77 लाख हेक्टेयर, आंध्र प्रदेश में 0.51 लाख हेक्टेयर, गुजरात में 0.32 लाख हेक्टेयर और तमिलनाडु में 0.01 लाख हेक्टेयर ज्यादा कपास की बुआई हुई है, जबकि पिछले साल की अपेक्षा पंजाब, कर्नाटक और ओडिशा में कपास की बुआई कम हुई है। कृषि मामलों के जानकारों का कहना है कि देश

के ज्यादातर हिस्सों में अच्छी बारिश हो रही है जिससे खरीफ सीजन की बुआई तेजी से हो रही है। कपास की बुआई सबसे ज्यादा होने की वजह इस साल देश के अधिकांश हिस्सों में हुई मॉनसून पूर्व बारिश को माना जा रहा है।

महाराष्ट्र कृषि मंत्रालय के अनुसार राज्य में 18.87 लाख हेक्टेयर में बुआई हो चुकी है जबकि पिछले साल इस समय तक राज्य में 12.79 लाख हेक्टेयर में कपास की बुआई हुई थी। महाराष्ट्र में कपास का सामान्य रकबा 41.38 लाख हेक्टेयर है। महाराष्ट्र कृषि विभाग ने चालू सीजन में कपास बुआई का लक्ष्य 35 लाख हेक्टेयर रखा है। इस तरह चालू सीजन में सरकारी लक्ष्य का करीब 54 फीसदी कपास की बुआई हो चुकी है। राज्य के कृषि विभाग के अधिकारियों का कहना है कि कपास की बुआई लक्ष्य से ज्यादा होने वाली है।

पिछले साल कपास की बुआई देर से शुरू हुई थी क्योंकि सूखे के कारण खेतों की तैयारी बारिश होने के बाद शुरू हो सकी थी जबकि इस बार ऐसा नहीं था। महाराष्ट्र में दूसरी फसलों की बुआई भी पिछले साल से बेहतर है। अभी तक राज्य में खरीब फसलों की कुल बुआई 48.82 लाख हेक्टेयर में हो चुकी है जबकि पिछले साल राज्य में इस समय तक 41.70 लाख हेक्टेयर में बुआई हुई थी।

मुंबई के 813 किसान कर्ज माफी सूची में

मुंबई (कासं)। मुंबई और उसके उपनगर इलाके में रहने वाले 813 किसानों को कर्जमाफी की सूची में स्थान दिया गया है। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फड़नवीस भी इस सूची से आश्चर्यचकित हैं। उन्होंने कर्जमाफी को मंजूरी देने से पहले जांच के आदेश दिए हैं। पिछले महीने राज्य सरकार द्वारा घोषित 34,000 करोड़ रुपये की कर्जमाफी योजना के अंतर्गत संभावित लाभार्थी किसानों की सूची जारी की गई है।

सवाल यह है कि आखिर मुंबई में खेतिहर किसान कहां पाए जाते हैं? इस मुद्दे पर विपक्ष ने भी सरकार पर निशाना साधा है। राकांपा प्रवक्ता नवाब मालिक ने मामले के जांच की मांग की है। उन्होंने कहा कि इससे साफ हो जाएगा कि क्या सचमुच कर्जमाफी का बेजा इस्तेमाल हो रहा है या नहीं? वैसे मुख्यमंत्री के आदेश के बाद ही, मुंबई की पौने दो करोड़ की आबादी में कर्जमाफी के लायक खेतिहर किसान की खोज सरकारी फाइलों में तेज हो गई है। सरकार की ओर से कहा गया है, हालिया सूची सूबे के उन संभावित किसानों की है, जिन्हें कर्जमाफी का लाभ मिल सकता है।

इसमें मुंबई और उपनगर के किसान दिखाए गए हैं। हो सकता है कि उन्होंने मुंबई जिला बैंक से कर्ज लिया होगा। वैसे भी अगर वे कर्जमाफी की शर्तें पूरा नहीं करेंगे तो उन्हें यह लाभ नहीं मिलेगा क्योंकि अभी घोषित सूची की जांच होना तय है। नियमानुसार, 34 हजार करोड़ रुपये की कर्जमाफी का लाभ उन्हें ही मिलेगा जिनका जीवनयापन केवल खेती पर निर्भर है। ऐसे में सरकार का कयास है कि जांच के बाद मुंबई में रहकर पैतृक इलाके की खेती पर कर्ज उठाने वाले खुद ही कर्जमाफी के दायरे से बाहर हो जाएंगे।

सम्पादकीय

दुग्ध क्रांति में निहित कृषि क्षेत्र

हाल ही में देश के अलग-अलग राज्यों में कृषि ऋण की माफी की गई। इसकी कुल राशि वर्ष 2017-18 के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के करीब 1.0-1.5 फीसदी के बराबर होगी। यह बात जाहिर करती है कि हमारी कृषि के साथ कहीं न कहीं कुछ तो गलत है। इस प्रकरण ने कृषि सुधार के मुद्दे को एक बार फिर चर्चा में ला दिया है। ऋण माफी की घोषणा के बाद वापस नहीं लिया जा सकता है। लेकिन इनकी बदौलत कृषि क्षेत्र की दिशा और सुधारों की गति पर अवश्य चर्चा हो सकती है। इनकी मदद से ही इसे स्थायी विकास की राह पर लाया जा सकता है। दूध से जुड़ी श्वेत क्रांति से जुड़े तीन सबक इस संदर्भ में प्रासंगिक हैं। वर्ष 1951-52 से 1971-72 तक दो दशक में देश में दूध का उत्पादन 1.7 करोड़ टन से बढ़कर महज 2.2 करोड़ टन तक पहुंचा था। दूध सस्ता था लेकिन सन 1960 के दशक के आखिर और 1970 के दशक के आरंभ तक वह शहरों में सरकारी दुकानों में आसानी से मिलता नहीं था। श्वेत क्रांति के आगमन के साथ ही अगले दशक में हर बार दूध का उत्पादन दोगुना बढ़ा। सन 1991-92 में यह 5.6 करोड़ टन हुआ तो वर्ष 2011-12 में 12.8 करोड़ टन। राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) की स्थापना सन 1965 में की गई थी। उसने यूरोपीय संघ द्वारा विश्व खाद्य कार्यक्रम के तहत दिए गए दूध पाउडर और बटर ऑयल की बिक्री के साथ ऑपरेशन फ्लड की शुरुआत की। इस दुग्ध क्रांति के तीन उद्देश्य थे। पहला, ग्रामीण आय में सुधार करना, दूध उत्पादन में स्थायित्व लाना और ग्राहकों तथा उत्पादकों के लिए उचित मूल्य की व्यवस्था करना। इस कार्यक्रम के मूल में आणंद शैली थी। यानी देश के अलग-अलग हिस्सों में सहकारी दूध उत्पादकों से दूध खरीदना। गुजरात के सहकारी दूध वितरण संघ लिमिटेड को अमूल का ब्रांड नाम दिया गया। इसके पास गुजरात के 35 लाख से अधिक दूध उत्पादकों का स्वामित्व था। यह देश भर में जाना पहचाना नाम बन गया। समय बीतता गया और सरकारी संस्थाओं मसलन दिल्ली दुग्ध योजना (डीएमएस) अथवा बिहार स्टेट डेयरी कॉर्पोरेशन को एनडीडीबी के हवाले कर दिया गया। आमतौर पर कृषि क्षेत्र की सफलता दूध तक सीमित रही। यह भी सच है कि दूध में कुछ ऐसी विशिष्टताएं होती हैं जो उसे अन्य कृषि उत्पादों से अलग करती हैं। उदाहरण के लिए दूध उत्पादन अन्य कृषि कार्यों के तुलना में आसान है। उसकी खरीद, परिवहन और भंडारण आसान हैं। चावल की बात करें तो वह बासमती, गोविंदभोग और सोना मसूरी जैसी कई किस्मों में आता है। दूध के साथ ऐसा नहीं है। दूध हर मौसम में हर रोज खरीदा जाता है। जबकि आम जैसी मौसमी जिंसों के साथ ऐसा नहीं है। इन तमाम विशेषताओं के बावजूद दूध से तीन अहम सबक सीखे जा सकते हैं। इनमें सबसे अहम है सरकारी हस्तक्षेप की एकदम सहज प्रकृति। पहली बात तो यह है कि दूध उत्पादन-खरीद की प्रक्रिया में सरकारी कंपनियां नहीं बल्कि सहकारी समितियां शामिल होती हैं। यह तरीका न्यूजीलैंड, नीदरलैंड और डेनमार्क में 19वीं सदी से ही आजमाया जा रहा है। दूध में प्रवेश बाधाएं बहुत कम हैं क्योंकि कोई बड़ा सरकारी प्रतिष्ठान इससे नहीं जुड़ा हुआ है। इसके चलते खरीद, परिवहन, भंडारण और वितरण के काम में बेहतरीन प्रतिस्पर्धा उत्पन्न हुई। सन 1991 में दूध को लाइसेंस व्यवस्था से बाहर कर उसे मिल्क ऐंड मिल्क प्रोडक्ट ऑर्डर (एमएमपीओ) 1992 के अधीन कर दिया गया। यह व्यवस्था अनिवार्य जिंस अधिनियम 1955 के तहत की गई। वर्ष 2011 में समापन से पहले एमएमपीओ बड़ी डेयरियों से दूध की आपूर्ति सुनिश्चित करने का काम करता रहा। गेहूं और चावल जैसी फसलों में सरकारी हस्तक्षेप अलग किस्म का रहा। भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) की स्थापना एनडीडीबी से एक साल पहले सन 1964 में की गई थी। एफसीआई का काम था किसानों के हितों की रक्षा के लिए मूल्य समर्थन नीतियों का इस्तेमाल, देश भर में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के जरिये खाद्यान्न वितरण और राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा के लिए अनाज का भंडारण। अप्रैल 1973 में तो इंदिरा गांधी के शासनकाल में गेहूं के थोक कारोबार का राष्ट्रीयकरण करने का प्रयास भी किया गया। अनाज की खरीद बिक्री-न्यूनतम समर्थन मूल्य, एफसीआई का बिल बोझ एक बड़े पीएसयू पर पड़ा जिसने इसे राजनीतिक दबाव की दृष्टि से संवेदनशील बना दिया। फरवरी 2014 में पंजाब चुनाव से पहले प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि एफसीआई को तीन हिस्सों में बांट देना चाहिए। जो क्रमशः खरीद, भंडारण और वितरण का काम करें। जनवरी 2015 में शांता कुमार की अध्यक्षता वाली एक उच्च स्तरीय समिति ने एफसीआई के पुनर्गठन संबंधी रिपोर्ट पेश की। रिपोर्ट में अनुशंसा की गई कि आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, हरियाणा, मध्य प्रदेश, ओडिशा और पंजाब में गेहूं खरीद का काम राज्य सरकार करें। कहा गया कि पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और असम में एफसीआई को इस काम में मदद दी जाए। यह वह इलाका है जहां छोटी जोत के किसान ज्यादा हैं और फसल एमएसपी से कम दाम पर बिकती है।

अब वक्त आ गया है कि या तो प्रधानमंत्री के सुझाव या शांता कुमार समिति की सिफारिश पर काम किया जाए। दूसरी बात, दूध के लिए कभी कोई एमएसपी नहीं रहा। उसकी वजह से कम से कम 23 फसलों के दाम में विसंगति आती है यह बात खुद समिति ने मानी। इसके अलावा एफसीआई की खरीद गेहूं और चावल की एमएसपी खरीद पर निर्भर है। सरकार को एमएसपी नीति पर पुनर्विचार करना चाहिए। तीसरा, बागवानी में देश ने काफी प्रगति की है। 26.9 करोड़ टन के उत्पादन के साथ वर्ष 2012-13 में यह खाद्यान्न से ऊपर निकल गई। लेकिन इस क्षेत्र में अभी काफी कुछ किया जा सकता है। इसकी मांग तेजी से बढ़ रही है। फलों और सब्जियों के क्षेत्र में श्रम को प्रोत्साहन रहता है और मूल्य भी अच्छा मिलता है। इनका उत्पादन छोटे किसानों को भी समृद्ध बना सकता है। इसके लिए शीत गृहों की जरूरत होगी और ढुलाई की समुचित व्यवस्था की भी। देश में कन्वेयर बेल्ट व्यवस्था की काफी कमी है जिसका असर उत्पादों को धोने, सुखाने, छांटने, पैक करने आदि में होता है। इसके अलावा सामग्री को अच्छी स्थिति में रखने के लिए रेफ्रिजरेशन वाहनों की आवश्यकता भी है।

ग्वार की फसल में समन्वित कीट व व्याधि प्रबन्धन

तेजपाल वाज्या, ममता देवी चौधरी एवं ममता वाज्या, श्रीकर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय जोबनेर (जयपुर)-303329

ग्वार का हिन्दी में मतलब है 'गाय का भोजन'। यह सूखारोधी वार्षिक दलहनी फसल है जो मृदा की उर्वरता शक्ति भी बढ़ाता है। यह फेबेसी कुल से संबंध रखती है। भारत एक मुख्य ग्वार उत्पादक देश है। विश्व का 80 प्रतिशत से ज्यादा उत्पादन भारत में किया जाता है जबकि भारत के कुल ग्वार उत्पादन क्षेत्र का लगभग 82 प्रतिशत राजस्थान में है। यह पश्चिमी राजस्थान में खरीफ की मुख्य फसल है। इसका उपयोग मुख्य रूप से बीज, चारा, हरी खाद, व सब्जी के रूप में किया जाता है। ग्वार के बीजों में भ्रूण पोश अन्य दलहनी फसलों की तुलना बड़ा होता है। इसके भ्रूण पोष में गलेक्ट्रोमेनन नामक गम निकाला जाता है, जिसे ग्वार गम कहते है जिसे ठण्डे पानी के साथ मिलाने पर चिपचिपा जैल बनता है। इसका उपयोग दुग्ध उत्पाद, कपड़े बनाने, कागज बनाने व विस्फोटक बनाने में किया जाता है। दूग्ध उत्पादन में कोमल आईस्क्रीम को कठोर बनाने, पनीर जमाने, मांस को बांधने में किया जाता है। ग्वार के सम्पूर्ण बीजों के कुल वजन का 19 से 43 प्रतिशत तक गम प्राप्त होता है। गम निकालने के बाद बीजों के अवशेषों में लगभग 35 प्रतिशत प्रोटीन होती है जो लगभग 95 प्रतिशत पचने योग्य होती है। ग्वार की खेती काफी अधिक लाभदायक एवं सुगमता से की जा सकने वाली है लेकिन इसमें लगने वाले कीटों व बीमारियों से फसल का बचाव जरूरी है। अन्यथा उत्पादन में कमी आ जाती है। अतः उनका उचित प्रबन्धन ग्वार की सफल खेती हेतु आवश्यक है।

कीट प्रबन्धन:

रस चूसने वाले कीट: ग्वार के पौधों पर रस चुसने वाले कीट जैसे सफेद मक्खी, मटर एफिड़ (मोयला) व हरा तेला का भी प्रकोप होता है। ये पौधे के कोमल भागों का रस चूसकर उन्हे कमजोर बना देते हैं। इसके नियंत्रण हेतु ऑक्सीडिमेटॉन 25 ई.सी. या फार्मोथियॉन 25 ई.सी. या डाईमिथोएट 30 ई.सी. या क्यूनॉलफॉश 25 ई.सी. का एक मिली/लीटर या मेलाथियान 50 ई.सी. 1.5 मि.ली./लीटर के पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये। जरूरत होने पर 15 दिन बाद दुबारा छिड़काव करें।

ग्वार मिज: (कोनटेरिनिया टेक्ससाना):-यह ग्वार का प्रमुख कीट है। अगर खेत में इसका बहुत अधिक प्रकोप हो जाये तो 30 प्रतिशत तक बीज उत्पादन घट जाता है। इस कीट का प्रकोप रेतीली व दोमट मृदा में अधिक होता है। इस कीट की परिपक्व मादा ग्वार की नई कलिका में अपने अंडे देती है, जो कलिका से बनी पत्तियों को हानी पहुंचाती है। कलिका में पत्तियां सुखकर नीचे गिर जाती है। इस कीट का कोकुन जमीन में बनता है व इससे वापस कीट निकलकर ग्वार की कलिका में फिर अंडे देते हैं। एक वर्ष में इनकी कई पीढ़ियां उत्पन्न हो जाती है। बारिश होने पर इनका प्रकोप काफी कम हो जाता है लेकिन जैसे ही मौसम साफ होता है इनका आक्रमण वापस हो जाता है।

नियंत्रण: ग्वार मिज का नियंत्रण उसी समय करना चाहिये जब ग्वार के पौधों पर कलिका बनने लगे, खासतौर पर 45 से 90 दिनों के बीच में। इसका नियंत्रण रस चूसने वाले कीटों की तरह ही करें।

सफेद लट: सफेद लट का प्रकोप प्रथम मानसून के कुछ समय बाद से प्रारंभ हो जाता है। इसकी लारवा ग्वार की कोमल जडों को खा जाती है। इससे पौधों की वृद्धि रूक जाती है तथा पौधे सूखने लगते हैं।

नियंत्रण : इसके प्रबन्ध हेतु क्यूनॉलफॉस-5 जी या पोरेट 10 जी की 20-25 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में मिलाना प्रभावकारी पाया गया है।

व्याधि प्रबन्धन:

जीवाणु पर्ण अंगमारी: यह बीमारी पत्तियों पर ब्लाइट के रूप में दिखाई देती है। यह धब्बे दिखने में गोल तेल और पानी से भीगे दिखाई देते है। धब्बे पत्तियों के अधिकतर क्षेत्र को ढक देते हैं। फलियों पर काली धारियां दिखाई पड़ती है। तने का अन्दर का भाग काला हो जाता है बीज सिकुड़कर काले हो जाते हैं।

नियंत्रण:

-फसलों के अवशेष व खरपतवार समय समय पर नष्ट कर दें।

-रोग रोधी किस्में उगायें।

-कम समय में पकने वाली किस्में बोयें।

-एक ग्राम स्ट्रैप्टोसाईक्लिन को एक लीटर पानी में घोलकर 1 किलो ग्राम बीज एक-दो घंटे तक भीगने के बाद छाया में सुखा कर बोयें।

-बीमारी की शुरूआत होने पर स्ट्रैप्टोसाईकिलन तीस ग्राम/एकड़ और कॉपर ऑक्सीक्लोराईड 200 ग्राम/एकड़ को 200 लीटर पानी में मिलाकर 15-20 दिन के अन्तराल में दो छिड़काव कर देवें।

-अल्टरनेरिया लीफ स्पॉट:-पत्तियों पर गहरे भूरे काले गोल अनियमित धब्बे दिखाई देते हैं ये धब्बे आकार में बढ़कर गहरे भूरे रंग के हो जाते हैं व संक्रमित फलियों में बीज सिकुड़कर भूरे हो जाते हैं।

नियंत्रण:

-बीमारी से ग्रसित पौधे को उखाड़ कर जला देवें।

-रोगप्रतिरोधी किस्में बोयें। एच.जी. 365 एच.जी. 563 एवं एच.जी. 75 इत्यादि।

-बीजाई के 40 से 50 दिन बाद या बीमारी की शुरूआत में 1.5 किलोग्राम/हेक्टेयर मैंकोजेब 500 लीटर पानी में घोलकर 15 दिन के अन्तराल में दो तीन बार छिड़काव करावें।

जड़ गलन: इस बीमारी में पौधे की जड़ें सिकुड़ कर गल जाती हैं। जड़ों के गलने से पौधे की उपापचय क्रिया व वृद्धि रूक जाती है। जड़ों के गलने से पौधा कमजोर होकर गिर जाता है। धीरे धीरे सुखकर मर जाता है।

नियंत्रण:

-ग्रसित पौधों के अवशेष व खरपतवार एकत्रित कर जला देवें।

-प्रतिरोधक किस्मे बोये।

-भूमि द्वारा संक्रमित बीमारियों को रोकने के लिये मई-जून में खेत की मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई कर धूप में खुला छोड़ देवें।

-दो ग्राम बाविस्टन से प्रति किलो बीज को उपचारित करें।

चूर्ण आसिता: इस बीमारी में सफेद पाउडर के समान पौधे पर धब्बे दिखाई देते हैं। ज्यो-ज्यो तापमान बढ़ता है पौधे पर धब्बे बढ़ते जाते हैं। पौधे के सभी भागों पर धूल के समान सफेद पाउडर की तरह धब्बे दिखाई पड़ते हैं। संक्रमित पौधे की पत्तियां गिर जाती है जिससे पौधा कमजोर हो जाता है। फलियां काली होकर बिखर जाती है।

नियंत्रण:

-संक्रमित पौधे के भाग जलाकर नष्ट कर देवें।

-खरपतवार को समय समय पर निकाल देवें।

-फसल पर घुलनशीलगंधक (0.3:) का एक किलोग्राम/हैक्टेयर की दर से 15 दिन के अन्तराल में छिड़काव करें।

राजमा की फसल में कीट एवं रोगों का एकीकृत प्रबन्धन

मंगला राम वाजीया तथा डॉ. डी. पी. अग्रोल
कीट विज्ञान विभाग
शेरे कश्मीर यूनिवर्सिटी ऑफ़ एग्रीकल्चरल साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी, जम्मू- 180009

राजमा पर्वतीय क्षेत्रों कीएक प्रमुख फसल हैं। इसके दानों की दाल तथा कच्ची फली की सब्जी बनाई जाती हैं। मुख्यतया यह दाल के रूप में प्रचलित है तथा किसानों की आमदनी बढ़ाने में भी सहायक हैं। अगर राजमा का उत्पादन दीर्घ स्तर पर किया जाए, तो बडे पैमाने पर रोजगार विकसित किया जा सकता है, जिससे समाज में आर्थिक परिवर्तन सम्भव है। इसमें 22 से 25 प्रतिशत प्रोटीन पाया जाता हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में उगाई जाने वाली राजमा अत्यधिक मुलायम एवं सुगंध के लिये प्रसिद्ध है। भारत में इसकी खेती 1 लाख हैक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है। मुख्य उत्पादक राज्यों में महाराष्ट्र, जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, तमिलनाडु के नीलगिरी पर्वत क्षेत्र, केरल में पलनी पर्वत क्षेत्र, कर्नाटक के चिकमगलूर क्षेत्र तथा पश्चिमी बंगाल के दार्जिलिंग क्षेत्र में की जाती हैं।

कीट एवं रोग नियंत्रण

प्रमुख कीट

चूसक कीट: मई से अक्टूबर तक इस कीट का प्रकोप अधिक होता है। छोटे रंग का कीट वयस्क अथवा निम्फ दोनों अवस्थाओं में पत्तियों का रस चूसकर सफेद धब्बे बना देता है। इसके जैविक नियत्रण हेतु नीम के तेल का 3 प्रतिशत की दर से छिड़काव करें।

फफोला भृंग: इसका प्रकोप जुलाई से अक्टूबर तक ज्यादा होता है। इसका वयस्क भृंग आकार में बड़ा एवं इसके पंखों पर काली या भूरी धारियां होती है। ये पत्तियों, फूलों, फलियों को खाकर काफी नुकसान पहुंचाते हैं। कम प्रकोप होने पर भृंगों को चुनकर नष्ट करना चाहिए।

तने की मक्खी (स्टेम फ्लाई): यह राजमा की फसल को नुकसान पहुंचाने वाला महत्वपूर्ण कीट हैं। इस कीट की इल्लियाँ पत्तियों के अन्दर घुसकर सुरंग बनाते हुए पर्ण वृन्त तथा तने में पहुंच कर पौधे को क्षति ग्रस्त कर देते हैं। इसके जैविक नियत्रण हेतु नीम के तेल का 3 प्रतिशत की दर से छिड़काव करें।

फलीभेद: राजमा की फसल का एक मुख्य कीट हैं। इसके जैविक नियत्रण हेतु नीम के तेल का 3 प्रतिशत की दर से छिड़काव करें।

बीन बिटिल: इस कीट के प्रौढ़ व सूंडी दोनों पौधे के सभी भागों को खाकर क्षति पहुचाते हैं।

बीन का घुन (बीन बिटिल): यह कीट भण्डार में बीज को क्षति पहुचाता हैं।

प्रमुख रोग

कोणीय पर्ण दाग (एन्गुलर लीफ स्पाट): इस रोग का लक्षण पत्तियों पर कोणीय भूरे रंग के धब्बे के रूप में प्रकट होता हैं। आर्द्र मौसम में इस रोग का प्रकोप बढ़ जाता हैं।

श्याम ब्रर्ण (एन्थ्रेक्नोज): इस रोग के लक्षण सर्वप्रथम फलियों, बीज व तनों पर काले रंग के धंसे चोट जनित धब्बे के रूप में दिखाई देते हैं। गम्भीर रूप से प्रभावित पौधों के तने टूट जाते हैं। रोग ग्रस्त पौधों की पत्तियां मुरझाकर गिर जाती हैं। यह रोग बीज के माध्यम से एक मौसम से दूसरें मौसम में फैलता हैं।

चूर्णी आसिता (पाउडरी मिल्ड्यू): यह रोग पत्ती, तना तथा फलियों को प्रभावित करता हैं। प्रारम्भिक अवस्था में पत्तियों पर हल्के धब्बे, गोल से अनियमित आकार के होते हैं जो बाद में सफेद पाउडर (चूर्ण) के रूप में बढ़कर एक दूसरे से मिल जाते हैं। जिससे बाद में प्रभावित पत्तियां गिर जाती हैं।

कोणदार पर्णचित्ती : पत्तियों में कोणदार धब्बे बन जाते हैं तथा फलियों की सतह पर भूरे रंग के गोल धब्बे दिखाई देते हैं। इस रोग के उपचार हेतु बीजों को जैविक फफूंदनाशी (ट्राइकोडर्मा विरेन्स) 3 ग्राम प्रति किग्रा. बीज से उपचारित करना आवश्यक हैं।

जीवाणु जनित अंगमारी: पत्तियों पर पीले-हरे रंग के धब्बे बनते हैं, जो बाद में काले हो जाते हैं तथा फलों पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं जिससे फ्ली खराब हो जाती है। इस बीमारी की रोकथाम हेतु बीज उपचार एवं उचित फसल चक्र अपनाना चाहिए।

सामान्य बीन मोजैक वाइरस (कामन बीन मोजैक वाइरस): इस रोग का वाइरस माहू कीट द्वारा फैलता हैं। रोग ग्रसित पौधे की पत्तियाँ अनियमित आकार तथा हल्की पीली एवं हरे रंग की धब्बेदार हो जाती हैं।

गोल्डेन मोजैक वाइरस: इस रोग का वाइरस (विषाणु) सफेद मक्खी के द्वारा फैलता है। रोग ग्रसित पौधों की पत्तियों पर हल्के पीले रंग के बिखरे हुए धब्बों के रूप में प्रकट होकर पूरी पत्तियों पर फैल जाते हैं। पत्तियों में हरित लवक (क्लोरोफिल) आंशिक रूप से या पूर्णतया नष्ट हो जाते हैं।

समेकित रोग एवं कीट नियंत्रण: ऐसी तकनीकें जो कि सरल, सर्व प्रभावी, कम खर्चीली, एवं जिसका पर्यावरण एवं जैव विविधता पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े तथा कृषकों को कीट व्याधियों की समस्या से छुटकारा भी मिल सकें, को अपनाना चाहिऐ।

मृदा सौरीकरण: मई तथा जून के माह में मृदा को सिंचित करके पॉलीथीन से ढ़क दिया जाता हैं। इससे मृदाजनित रोग एवं कीट नियंत्रित होते हैं। मृदा सौरीकरण रोगजनका, कीटों व खरपतवार को प्रभाव को कम करने के लिए एक प्रभावशाली एवं कम लागत तकनीक है। इस प्रक्रिया में खेत को बीज बुवाई से 5 से 8 सप्ताह पूर्व तैयार कर लिया जाता हैं तथा इसे पानी से पूरी तरह नम कर दिया जाता हैं। तत्पश्चात् खेत को पारदर्शी पॉलीथीन की चादर (50-100 माईक्रोन मोटाई वाली) से ढ़क देते है तथा चारों ओर से पॉलीथीन की चादर को इस प्रकार दबा देते हैं कि उसमें वायु का संचार न हो सके इस पॉलीथीन की चादर को बीज बुवाई से 3-4 दिन पूर्व ही हटाते हैं मृदा सौरीकरण से खेत में मिट्टी का तापमान बढ़ जाता हैं जो रोगजनकों एवं कीटों के लिए घातक हो जाता हैं। मृदा सौरीकरण के प्रभावशाली परिणाम प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक हैं कि सौरीकरण 5-8 सप्ताह तक किया जाय, पारदर्शी पॉलीथीन का ही प्रयोग किया जाएं तथा पॉलीथीन बिछाने से पूर्व खेत की सिंचाई व मृदा में कार्बनिक पदार्थ मिला हो तथा पॉलीथीन का आवरण ठीक प्रकार लगाया गया हो।

जैविक फफूंदनाशी: पन्त बायोकन्ट्रोल एजेण्ट-3, 8-10 ग्राम प्रति किग्रा बीज की दर से उपचारित करने से मृदाजनित तथा बीजजनित रोगों से रोकथाम होती है।

जैविक फफूंदीनाशक का पर्ण छिड़काव: जैविक फफूंदीनाशक जैसे पन्त बायोकन्ट्रोल ऐंजेट-3 का 10 ग्राम. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करने से फफूंदीजनित रोगों का नियंत्रण किया जा सकता हैं।

कुरमुला प्रंबधन:-मार्च-अप्रैल में प्रक्षेत्र की गहरी जुताई करनी चाहिए जिससे कुरमुला कीट की सूडियां प्यूपा बनने के पहले नष्ट हो जाएं। मई के प्रथम सप्ताह से प्रकाष प्रंपच (लाइट ट्रैप) लगाकर वयस्क (भृंग) को प्रकाश-श्रोत पर आकर्षित कर नष्ट कर देना चाहिए। कुरमुला कीट से ग्रसित प्रक्षेत्रों में सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करना नितान्त आवश्यक है क्योंकि कच्चा गोबर प्रथम अवस्था वाले गिडार (सूड़ियों) द्वारा भोज्य पदार्थ के रूप में उपयोग किया जाता हैं। अत: पर्वतीय क्षेत्रों में कच्चा गोबर प्रयोग करने की पुरानी परम्परा को छोड़कर सड़ी गोबर की खाद का प्रयोग आवश्यक हैं। जिससे कुरमुला कीट का प्रकोप कम किया जा सके। सडे हुए गोबर में जैविक फफूंदीनाशक (ब्यूवेरिया बैसियाना) का 1 किलोग्राम प्रति कुन्तल गोबर में डालने से 1 सप्ताह पूर्व मिलाये तथा छायादार स्थान पर रखकर उसे गीले बोरे से ढ़क दें ताकि ब्यूवेरिया के सफेद स्पोर्स अंकुरित हो जाय। फिर इस ब्यूवेरिया उपचारित कम्पोस्ट को एक एकड़ क्षेत्रफल में बुवाई से पूर्व मिट्टी में मिला दें। ब्यूवेरिया उपचारित कम्पोस्ट दीमक, सफेद गिड़ार नियंत्रण के लिए प्रभावशाली पायी गयी हैं।

लागत पर लगाम के मंथन में डेयरी

मुंबई (कासं)। ब्रांड निर्माण, दूध की सीधी खरीद और मूल्य वर्धित उत्पादों में विस्तार के जरिये लागत प्रबंधन पर ध्यान देने से भारतीय डेयरी उत्पादकों को अच्छे दिन आने की उम्मीद है। आईसीआईसीआई सिक्युरिटीज द्वारा किए गए एक अध्ययन में अनुमान जताया गया है कि खरीद क्षमता के साथ-साथ दूध का प्रति व्यक्ति उपभोग बढ़ने, बढ़िया दूध की ओर प्रतिस्थापन और मूल्य वर्धित उत्पाद वर्ग के उपभोग में वृद्धि से भारत के डेयरी क्षेत्र में मध्य अवधि के दौरान दो अंकों की वृद्धि होगी। मौसम की वजह से स्थानीय मांग में अनिश्चितता और वैश्विक कारकों से निर्धारित स्किम्ड मिल्क पाउडर (दूध से निर्मित गौण उत्पाद) के दामों के कारण भारत में डेयरी उत्पादकों का मुनाफा दबाव में रहा है, जबकि इस क्षेत्र में वृद्धि के व्यापक अवसर रहे हैं। उद्योग ने वैश्विक कंपनियों को भारत में अजैविक उत्पादों के रास्ते प्रवेश करने और मूल्य वर्धित उत्पादों में बड़ा निवेश करने के लिए प्रेरित किया है। आईसीआईसीआई सिक्युरिटीज के शोध विश्लेषक अनिरुद्ध जोशी ने कहा कि वित्त वर्ष 1992 से वित्त वर्ष 2016 के दौरान भारत में दूध उत्पादन में चार प्रतिशत की संयुक्त वार्षिक वृद्धि दर से इजाफा हुआ है। इस दौरान दूध के दाम में औसतन सात प्रतिशत की सालाना वृद्धि हुई है। भारत से दूध निर्यात नगण्य है। देश में मुख्य रूप से भैंसों का दूध उत्पादन किया जाता है और स्वदेशी मूल्य वर्धित उत्पाद विकसित देशों से बहुत अलग होते हैं। इस कारण भारत में उत्पादित दूध का स्थानीय बाजार में व्यापक उपभोग होगा। खरीद की क्षमता में वृद्धि के साथ प्रति व्यक्ति दूध उपभोग में बढ़ोतरी, असंगठित भागीदारों से संगठित भागीदारों की ओर स्थानांतरण, बढ़िया दूध की ओर प्रतिस्थापन और दूध के मूल्य वर्धित उत्पादों के उपभोग में इजाफे को देखते हुए इस क्षेत्र में दो अंकों की निम्न स्तर पर वृद्धि होती रहेगी। हालांकि अगले 2-5 सालों में भारतीय डेयरियों के राजस्व के साथ-साथ मुनाफे में वृद्धि के जो मुख्य निर्धारक रहेंगे वे हैं-दूध की सीधी खरीद का सुदृढ़ीकरण, उत्पाद का सही मिश्रण और वितरण का विस्तार। भारत में दूध के उपभोग की प्रवृत्ति अभी विकसित हो ही रही है तथा पनीर, मक्खन और बढ़िया दूध जैसे उत्पादों में निकट भविष्य में निवेश जारी रहेगा। इसलिए दही, मक्खन युक्त दूध और पनीर जैसे ताजे दुग्ध उत्पादों पर ध्यान केंद्रित करने वाली कंपनियों को लगाई गई पूंजी पर अच्छा-खासा नफा होगा। पिछले कुछ सालों के दौरान वैश्विक बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारत के डेयरी क्षेत्र में बहुत अधिक निवेश किया है। जहां एक ओर न्यूयॉर्क स्थित फर्म की स्थानीय शाखा केकेआर इंडिया ने क्वालिटी ब्रांड की डेयरी उत्पादक क्वालिटी लि. में 600 करोड़ रुपये का निवेश किया है, वहीं फ्रांस के दुनिया के सबसे बड़े डेयरी उत्पाद समूह लैक्टालिस ने तिरुमला मिल्क में 1,750 करोड़ रुपये और अनिक इंडस्ट्रीज में 470 करोड़ रुपये का निवेश किया है।

खरीफ सत्र में धान का 6, दलहन का 23 प्रतिशत रकबा बढ़ा

नई दिल्ली (कासं)। चालू खरीफ सत्र में अभी तक धान बुआई का रकबा पिछले साल इसी समय की तुलना में छह प्रतिशत बढ़कर 80 लाख हेक्टेयर हो गया है जबकि दलहनों की बुआई का रकबा 23 प्रतिशत बढ़कर 44.11 लाख हेक्टेयर तक पहुंचा है। खरीफ की बुआई दक्षिण पश्चिम मॉनसून के साथ शुरू होती है और जुलाई से गति पकड़ती है। इस सत्र में मुख्यत: धान, तुअर, मूंग, उड़द, सोयाबीन, सूरजमुखी बीज और कपास की खेती हैं। एक सरकारी बयान में कहा गया है, राज्यों से प्राप्त खबरों के अनुसार सात जुलाई 2017 की स्थिति के अनुसार बुआई का कुल रकबा 404.27 लाख हेक्टेयर था। पिछले वर्ष इसी अवधि में रकबा 371.39 लाख हेक्टेयर था। चालू खरीफ सत्र में धान की बुआई अभी तक 79.81 लाख हेक्टेयर में की गई है जो पिछले वर्ष अब तक 75.28 लाख हेक्टेयर में थी। दलहनों का रकबा पिछले वर्ष इसी अवधि के 35.88 लाख हेक्टेयर के मुकाबले बढ़कर इस बार 44.11 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गई है। मोटे अनाजों की बुआई का रकबा बढ़कर 80.78 लाख हेक्टेयर (पिछले साल 70.11 लाख हेक्टेयर) है। तिलहनों की बुआई का रकबा एक साल पहले इसी अवधि के 69.74 लाख हेक्टेयर से बढ़कर अब 72.87 लाख हेक्टेयर तक हो गया है। गन्ने की बुआई 47.93 लाख हेक्टेयर में की गई है जो पिछले साल की समान अवधि में 45.22 लाख हेक्टेयर में की गई थी। कपास खेती का रकबा बढ़कर 71.82 लाख हेक्टेयर हो गया है जो पिछले वर्ष की समान अवधि में 67.89 लाख हेक्टेयर था। पटसन का रकबा एक साल पहले के 7.27 लाख हेक्टेयर से घटकर अबकी बार 6.95 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है। चालू वर्ष में मॉनसून के सामान्य रहने की उम्मीदों के बीच सरकार को नए फसल वर्ष 2017-18 में खाद्यान्न और बागवानी फसलों का उत्पादन जोरदार होने की उम्मीद है। हालांकि भारी उत्पादन के परिणामस्वरूप स्थानीय बाजारों में कीमतों में गिरावट से किसानों की परेशानियां बढ़ने का अंदेशा भी रहता है।

मिर्च की 'सदाबहार' किस्म

देती है एक हैक्टेयर में 40 क्विंटल पैदावार

लखनऊ (विसं)। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान से विकसित पूसा सदाबहार किस्म के तैयार होने में मात्र 60 से 70 दिनों का समय लगता है। मिर्च की यह किस्म एक हेक्टेयर में 40 कुंतल की पैदावार देती है, जो मिर्च की किसी भी किस्म से कहीं अधिक है। पूसा से विकसित की गई मिर्च की पूसा सदाबहार किस्म देश के किसी भी हिस्से में उगाई जा सकती है। इस खास किस्म के बारे में पूसा के वनस्पति विज्ञान विभाग के प्रमुख डॉ. प्रीतम कालिया बताते हैं, अगर मिर्च की शॉर्ट टाइम वराइटी की बात की जाए तो पूसा सदाबदार मिर्च सबसे खास मानी जाती है। इस किस्म की बुवाई पूरे भारत में की जाती है, इसकी नर्सरी जून से जुलाई माह तक तैयार की जाती है। यह किस्म एक हेक्टेयर में करीब 40 कुंतल की पैदावार देती है। पूसा सदाबहार किस्म की मिर्च छह से आठ सेमी. लंबी होती है और इस किस्म से करीब एक गुच्छे में 12 से 14 मिर्च पैदा होती हैं। यह किस्म रोपाई के 60 दिन बाद तैयार हो जाती है। इस किस्म की खेती में एक हेक्टेयर खेत में 150 ग्राम बीज की जरूरत पड़ती है। पूसा सदाबहार मिर्च में सिंचाई की आवश्यकता बेहद जरूरी होती है। बुवाई से सात दिन के अंतराल पर सिंचाई की जाती है। इसलिए बारिश के समय ही इस मिर्च की नर्सरी तैयार करना बेहद असरदार माना गया है।

महाराष्ट्र में अब सीधे हो सकेगा सरपंच का चुनाव

मुंबई (कासं)। मतदाताओं के बीच से सीधे नगरपालिका अध्यक्षों के चुनाव की अनुमति का राजनीतिक लाभ ले चुकी महाराष्ट्र सरकार ने सरपंचों का भी चुनाव उसी तरह कराने का फैसला लिया है। राज्य सरकार ने सरपंचों के चुनाव पर फैसला लिया है। नगरपालिका प्रमुख के चुनाव पर लिए गए फैसले से भाजपा को बड़ा लाभ मिला है। सरकार ने कस्बे के लोगों के बीच से परिषद अध्यक्ष चुने जाने की अनुमति दी थी। राज्य में आने वाले दिनों में 8000 ग्रामपंचायतों में चुनाव कराए जाएंगे। भाजपा को इस चुनाव में भी नगरपालिका चुनावों का प्रदर्शन दोहराने की उम्मीद है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फड़नवीस की अध्यक्षता में राज्य मंत्रिमंडल की बैठक हुई। इसी बैठक में महाराष्ट्र ग्राम पंचायत अधिनियम 1958 की संबंधित उपधाराओं को संशोधित करने का फैसला लिया गया। इससे गांव के लोगों के बीच से सीधे सरपंच (ग्राम पंचायत प्रमुख) का चुनाव किया जा सकेगा। इस संबंध में शीघ्र ही अधिसूचना जारी होने की उम्मीद है। राज्य सरकार मानसून सत्र के दौरान संशोधन विधेयक पेश करेंगे।

मिट्टी के सूक्ष्म तत्वों की जांच करने वाली एटॉमिक एब्जार्सन स्पेक्ट्रोफोटोमीटर मशीन

कन्नौज (कासं)। मिट्टी में कौन कौन से पोषक तत्व हैं और किन किन पोषक तत्वों की कमी है। अब अपने-अपने खेत की मिट्टी में क्या कमी है इस बात का पता कन्नौज के किसान आसानी से लगा सकेंगे, क्योंकि कृषि विभाग में एटामिक एब्जार्सन स्पेक्ट्रोफोटोमीटर नाम की नयी मशीन आ गयी है जिससे मिट्टी में चार पोषक तत्वों जिंक, आयरन, कॉपर और मैगनीज की जांच आसानी से हो जाएगी। कन्नौज की भूमि परीक्षण प्रयोगशाला के अध्यक्ष, राजेन्द्र प्रसाद कटियार बताते हैं, इस मशीन की मदद से एक सप्ताह के भीतर ही किसान को अपनी मिट्टी की जांच रिपोर्ट मिल जाएगी, इससे पहले मिट्टी के सूक्ष्म तत्वों की जांच सिर्फ कानपुर और इटावा में होती थी, कानपुर मंडल होने की वजह से कई जिलों से मिट्टी के नमूने वहां पहुंचते थे, इसलिए जांच रिपोर्ट आने में काफी दिन का समय लग जाता था। इस नयी मशीन पर मिट्टी के कुछ नमूनों का परीक्षण करते हुए प्रधान सहायक रमेश चंद्र कटियार बताते हैं, पहले जो मशीन थी उससे सिर्फ एनपीके यानी नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाष की जांच होती थी, लेकिन अब इस एड्वास मशीन के जरिए जिंक, आयरन, कॉपर और मैगनीज जैसे तत्वों की भी जांच संभव हो पा रही है, जिससे किसानों को बहुत राहत है।

हरियाणा में धान की खेती बंद करने वाले किसानों की मिलेगी प्रोत्साहन राशि

नारनौंद (हिसार)। मुख्यमंत्री मनोहरलाल ने राखी गढ़ी को पर्यटन स्थल बनाने के साथ ही नारनौद विधानसभा क्षेत्र के लिए कई योजनाओं की घोषणा की। साथ ही धान की खेती का मोह छोड़ने वाले किसानों को प्रोत्साहन राशि भी दिए जाने की भी जानकारी दी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री ने किसानों से अनुरोध किया कि धान की फसल में अधिक पानी की जरूरत होती है। इस वजह से भूजल स्तर लगातार गिरता जा रहा है। उन्होंने कहा कि धान बोने वाले किसान को इसकी जगह अन्य फसलें बोने पर घर बैठे 8 से 10 हजार रुपये तक का आर्थिक प्रोत्साहन दिया जाएगा।

आपकी फसल को कीटों से बचाएंगी ये नीली, पीली पट्टियां

लखनऊ (विसं)। अक्सर किसान अपनी फसल में लगने वाले कीटों से परेशान रहते हैं जिसके लिए तरह-तरह के कीटनाशक का इस्तेमाल करते रहते हैं। लेकिन किसान बिना कीटनाशक के इस्तेमाल के बिना खर्चे के अपनी फसल को कीटों से बचा सकते हैं। उसके लिए किसन को सिर्फ कुछ नीली, पीली पट्टियों की जरूरत पड़ेगी, जिसे स्टिकी ट्रैप कहते हैं।आधुनिक कृषि उत्पादन पद्धति में किसी नाशीजीव का नियंत्रण करने के लिए कम से कम रासायनिक छिड़काव करने का सुझाव दिया जाता है तथा यांत्रिक नियंत्रण के साधनों जैसे फेरोमोन ट्रैप (गंधपांस), प्रकाश प्रपंच (लाइट ट्रैप), ब्लू स्टिकी ट्रैप, येल्लो स्टिकी ट्रैप एवं बर्ड पर्चर (चिड़ियों का बैठक) आदि का इस्तेमाल अगर सही समय पर किया जाय तो फसल नुकसान को 40 से 50 प्रतिशत कम किया जा सकता है।

क्या होता है स्टिकी ट्रैप: स्टिकी ट्रैप दरअसल पतली सी चिपचिपी शीट होती है। यह फसलों की रक्षा बिना किसी रसायन के इस्तेमाल से करती है और रसायन के मुकाबले सस्ती भी रहती है। स्टिकी ट्रैप शीट पर कीट आ कर चिपक जाते हैं जिसके बाद वह फसल को नुकसान नहीं पहुंचा पाते हैं। स्टिकी ट्रैप कई तरह की रंगीन शीट होती हैं जो फसल को नुकसान पहुंचाने वाले कीटों को अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए खेत में लगाई जाती है। इससे फसलों पर आक्रमणकारी कीटों से रक्षा हो जाती है और खेत में किस प्रकार के कीटों का प्रकोप चल रहा है इसका सर्वे भी हो जाता है।

कैसे काम करता है स्टिकी ट्रैप: हर कीट किसी विशेष रंग की ओर आकर्षित होता है। अब अगर उसी रंग की शीट पर कोई चिपचिपा पदार्थ लगा कर फसल की ऊंचाई से करीब एक फीट और ऊंचे पर टांग दिया जाए तो कीट रंग से आकर्षित होकर इस शीट पर चिपका जाता है।

पीला स्टिकी ट्रैप: सफेद मक्खी, ऐफिड और लीफ माइनर जैसे कीटों के लिए बनाया जाता है। यह ज्यादातर सब्जियों की फसल में लगते हैं।

तेला कीट से बचाव को करें सोलोमेन का स्प्रे

बख्शगढ़ (विसं)। कृषि एवं कल्याण विभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गांव सागरपुर का दौरा करके कपास की खेती का निरीक्षण किया।

टीम ने यहां पर कई किसानों के खेतों पर जाकर फसल में लगी बीमारियों को देखा और उनका मौके पर ही किसानों को उपचार बताया। कृषि वैज्ञानिकों ने बताया कि यदि कपास में तेला कीट की बीमारी लगी हुई है तो किसान सोलोमेन का छिड़काव करें। सफेद मक्खी आने पर एमिडक्लोप्रिड-50 एमएल प्रति एकड़, रोगोर-250-300 ग्राम का मिलाकर स्प्रे करें। जड़ गलन होने पर स्ट्रेप्टोसाइलिन-5 से 8 ग्राम और बेसविस्टिन 250-300 ग्राम और कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का स्प्रे हर 15 दिन बाद करें। सफेद कीड़ा लगने पर इस दवाई का एक बार अवश्य इस्तेमाल करें, बाकि 15 दिन बाद उस दवाई को बदल लें।

असामान्य वर्षा की मार से बिगड़ेगी कपास की पैदावार

सुरेश शर्मा

मुंबई । इस साल किसानों में कपास रकबा बढ़ाए जाने की प्रवृत्ति दिखने के बावजूद उन्हें उपज में गिरावट का डर सता रहा है। पिछले तीन हफ्तों के दौरान कपास के प्रमुख क्षेत्रों में कम वर्षा होने की वजह से भी यह आशंका बलवती हुई है। भारतीय मौसम विभाग ने इस साल भी पिछले साल की तरह सामान्य मॉनसून का पूर्वानुमान जताया है। लेकिन दीर्घ अवधि औसत का सामान्य मॉनसून होने के बावजूद पिछले साल वर्षा का वितरण चिंताजनक रहा। पिछले साल जहां एक ओर भारत के मध्य, उत्तरी और पूर्वी भागों में सामान्य से अधिक वर्षा हुई, वहीं पश्चिमी और दक्षिणी भागों में इसकी कमी बनी रही।

कपास की खेती वाले बड़े क्षेत्रों में कम वर्षा की सूचना से विशेषज्ञों ने पिछले साल की पुनरावृत्ति होने का डर जताना शुरू कर दिया है। पिछले साल कम रकबे के बावजूद किसानों को रिकॉर्ड उत्पादकता और बेहतर दाम प्राप्त हुए थे। इस साल अधिक रकबे के बावजूद किसानों को कम उपज का डर अपने आप में महत्त्वपूर्ण हो जाता है। पिछले साल की आमदनी से प्रोत्साहित होकर किसानों ने इस सीजन की शुरुआत में रकबे में 50 प्रतिशत की वृद्धि करने के बाद कपास बुआई की गति कम कर ली है। शहर के एक बड़े कपास व्यापारी और निर्यातकर्ता अरुण दलाल ने कहा कि इस फसल में कम से कम एक महीने की देरी होने की संभावना है और इस वजह से इसकी उपज प्रभावित होती नजर आ रही है। व्यापार के संबंध में उत्तरी क्षेत्र से काफी पूछताछ दर्ज की जा रही है, हालांकि आने वाली फसल में देरी होने से ताजे सौदों को प्रोत्साहन मिल सकता है। कपास की गांठों की अच्छी मांग रही है। इस कारण कपास के दाम और बढ़ सकते हैं तथा प्रचलित 42,500-44,500 रुपये प्रति टन का दायरा जारी रह सकता है।

कृषि मंत्रालय द्वारा एकत्रित किए गए आंकड़े दर्शाते हैं कि कपास के तहत आने वाला बुआई क्षेत्र मामूली रूप से बढ़कर 72 लाख हेक्टर हो गया है, जबकि पिछले साल समान अवधि में यह 68 लाख हेक्टर था। केयर रेटिंग्स के मुख्य अर्थशास्त्री मदन सबनवीस ने कहा कि जुलाई और अगस्त के दौरान होने वाली वर्षा भारतीय कृषि के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। इस कारण इस खरीफ सीजन की कृषि पैदावार पर कोई पुख्ता आंकलन करने से पहले हमें अगस्त के आखिर तक इंतजार करना पड़ेगा। नाथ सीड्स के प्रबंध निदेशक सतीश कागलीवाल के अनुसार, मॉनसून की किसी भी अनियमित वर्षा या मौसम संबंधी किसी भी अवरोध से इस साल कपास की पैदावार पर प्रभाव पड़ सकता है। इस बीच किसानों ने कपास के बुआई क्षेत्र में इजाफा कर लिया है। पिछले साल की अधिकांश अवधि के दौरान कपास के दाम न्यूनतम समर्थन मूल्य से ऊपर रहे हैं, जबकि तिलहन और दलहन के दाम लगभग पूरे सीजन के ही दौरान लगातार न्यूनतम समर्थन मूल्य से नीचे रहे हैं।

अब ऊसर और बीहड़ भूमि में भी लहलहाएंगी फसलें

लखनऊ (विसं)। उत्तर प्रदेश में पिछले कई सालों से खाद्यान्न उत्पादन को बढ़ाने के लिए कई योजनाएं चलाई जा रही हैं बावजूद इसके खाद्यान्न उत्पादन स्थिर है। वहीं दूसरी तरफ कृषि योग्य जमीन का गैर कृषि में उपयोग होने से हर साल 25 से 30 हजार हेक्टेयर खेती की जमीन घट रही है। ऐसे में प्रदेश की 24 हजार हेक्टेयर ऊसर और बीहड़ भूमि का उपचार करके उसको खेती के लिए लायक बनाने के लिए उत्तर प्रदेश भूमि सुधार निगम योजना बनारक काम करने जा रहा है। उत्तर प्रदेश के कृषि उत्पादन आयुक्त चंद्र प्रकाश ने बताया 'प्रदेश के 32 जिलों में 8 हजार हेक्टेयर ऊसर भूमि और 16 हजार बीहड़ भूमि को सुधारने की परियोजना को मंजूरी मिल चुकी है। डेढ़ साल में इन जमीनों का उपचार करके यहां पर खेती शुरू हो जाएगी।' उत्तर प्रदेश में फिरोजाबाद, इटावा, औरैया, बाराबंकी, इलाहाबाद, कौशाम्बी, रायबरेली, प्रतापगढ़, जौनपुर और सुल्तानपुर ऐसे जिले हैं जहां पर बड़ी मात्रा में ऊसर और बीहड़ भूमि बेकार पड़ी है। इन जमीनों का किसी भी तरह का उपयोग नहीं हो पा रहा है। ऐसे में पिछले कई सालों से यहां की जमानों को सुधारने के लिए उत्तर प्रदेश भूमि सुधार सुधार निगम विश्व बैंक और भारत सरकार से मदद लेकर कई परियोजना चला रहा है। ऊसर और बीहड़ भूमि को सुधारने के लिए जहां पर यह जमीनें हैं उसके आसपास के गांव के लोगों को जागरूक करनके साथ ही वाटर यूजर ग्रुप का गठन किया जाना है। उत्तर प्रदेश भूमि सुधार निगम के अनुसार प्रदेश में 1 लाख 30 हजार उसर-बीहड़ भूमि को चिन्हित किया गया है।

दाल का उत्पादन बढ़ाने के लिए खुलेंगे सीड हब

लखनऊ (विसं)। भारत में उन्नत बीजों के संरक्षण और उनके विकास के लिए केंद्र सरकार ने भारत के प्रमुख दलहन उत्पादन करने वाले राज्यों में सीड हब स्थापित कर रही है। इन केंद्रों की मदद से जहां एक तरफ राज्यों में किसानों को खेती के लिए उन्नत बीज उपलब्ध होंगे, वहीं तेजी से बढ़ रहे दलहन के दामों पर भी काबू पाया जा सकेगा। उत्तर प्रदेश में स्थापित किए गए सीड हब के बारे में भारतीय दलहन अनुसन्धान संस्थान के इंचार्ज, सीड हब डॉ. पीके कटियार बताते हैं, देश में मौजूदा समय में दलहनी फसलों का उत्पादन 160 लाख टन से अधिक है। इसे बढ़ाकर 240 लाख टन किया जाना है, इसके लिए देश में 150 सीड हब खोले जा रहे हैं। उत्तर प्रदेश में मुख्य रूप से तीन स्थानों (कानपुर, फैज़ाबाद और चित्रकूट) में सीड हब स्थापित किए जा रहे हैं। देश के प्रमुख दलहन उत्पादक राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों, परिषद के संस्थानों और कृषि वैज्ञानिक केन्द्रों में सीड-हब खोले जा रहे हैं। इस योजना के अंतर्गत प्रति वर्ष 1.50 लाख कुंतल अतिरिक्त बीज उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है।

मेट्रो के कचरे से बनेगा 300 एकड़ का पार्क

मुंबई (कासं)। पहली बार बीएमसी कचरे से कुछ बेहतर करने जा रही है। कोलाबा-बांद्रा मेट्रो-3 प्रोजेक्ट के तहत निकलने वाले मलबे का इस्तेमाल 300 एकड़ में सेंट्रल पार्क के बनाने के लिए कर रहा है। इसके लिए अरब सागर में नरीमन प्वाइंट और कफ परेड के बीच जमीन पर दावा किया गया है। यह संशोधित ड्राफ्ट डेवलपमेंट प्लान (डीपी) 2034 के तहत निर्धारित किया गया है। सिविक चीफ अजय मेहता इस परियोजना को तेजी से पूरा करना चाहते हैं। नरीमन प्वाइंट में समुद्र किनारे 'सेंट्रल पार्क' के विकास के लिए बीएमसी की योजना पहले से ही ड्राइंग बोर्ड पर हैं। परियोजना की गति बढ़ाने के लिए डीपी विभाग ने मुंबई महानगर और क्षेत्रीय विकास प्राधिकरण (एमएमआरडीए) को इसके बारे में सूचना दे दी है। मेट्रो III के लिए पर्यावरण के प्रभाव का आकलन करने वाली रिपोर्ट के मुताबिक, निर्माण के दौरान 5.40 मिलियन क्यूबिक मीटर मलबे की खुदाई होने की संभावना है। बीएमसी मेट्रो के काम के दौरान निकलने वाले इस मलबे को लेने के लिए उत्सुक है, क्योंकि इससे उसका ट्रांसपोर्टेशन खर्च बचेगा। मेट्रो लाइन के लिए शुरुआती काम शुरू कर दिया गया है और सड़कों के बीच में व किनारों पर बैरिकेटिंग लगा दिए गए हैं।

एक सिविक अधिकारी ने कहा कि दक्षिण मुंबई में मेट्रो का काम होने से परिवहन में आसानी होगी। हमने एमएमआरडीए को परियोजना के बारे में जानकारी दे दी है क्योंकि वे 300 एकड़ जमीन के आस-पास के क्षेत्रों में नियोजन प्राधिकरण हैं, जो कि सेंट्रल पार्क के लिए रिजर्व है। यदि एमएमआरडीए को इस परियोजना के बारे में कोई आपत्ति है, तो वे इसे हमारी जानकारी में लाएं।

गाय ने 18.240 किलोग्राम दूध देकर रिकार्ड बनाया

महेंद्रगढ़ (विसं)। गांव नांगल सिरोही निवासी पंकज पुत्र जयसिंह प्रधान की हरियाणा नस्ल की गाय ने 18.240 किलोग्राम दूध देकर रिकार्ड बनाया है। प्रतियोगिता के संचालक डॉ. शमशेर सिंह ने बताया कि राजकीय पशु चिकित्सालय नांगल सिरोही में हरियाणा नस्ल की गायों की दुग्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। प्रतियोगिता में पंकज की हरियाणा नस्ल की गाय ने 18.240 किलोग्राम दूध देकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। यह जिले में रिकार्ड है। इसी तरह जगदीश प्रसाद पुत्र सरदार सिंह नांगल सिरोही की गाय ने 11.340 किलोग्राम दूध देकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता के समापन पर पशुपालकों के लिए जागरूकता शिविर लगाया गया। इसमें देशी गायों के दूध से होने वाले लाभों, बरसात के मौसम में होने वाली बीमारियों तथा उनकी रोकथाम के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई।

जीएम सरसों के बाद अब जीएम मक्के पर रार

लखनऊ (विसं)। जीएम सरसों की व्यवसायिक खेती को लेकर हो रहे विरोध के बीच पंजाब सरकार ने अंतराष्ट्रीय कंपनियों के जीएम मक्का के द्वितीय चरण के परीक्षण का मंजूरी दी है। जीएम मक्का को लेकर पंजाब राज्य की विशेषज्ञ कमेटी बनाई गई थी जिसका नेतृत्व पंजाब विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बीएस ढिल्लो कर रहे थे। पंजाब सरकार के कृषि निदेशक डॉ. जेएस बैंस ने कहा कि राज्य सरकार ने इन परीक्षणों के लिए हरी झंडी देने के साथ ही केन्द्र सरकार को जेनेटिक इंजीनियरिंग अप्रेजल कमेटी (जीईएसी) को भेज दिया है। पंजाब सरकार इस फैसले का देश के जाने माने कृषि एवं पर्यावरण विशेषज्ञ और किसानों ने विरोध करना शुरू कर दिया है। बीजेपी के पितृ संगठन राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के फ्रंटल संगठन स्वदेशी जागरण मंच के राष्ट्रीय सह-संयोजक डॉ. अश्विनी महाजन ने कहा

जीएम मक्के के परीक्षण को मंजूरी देने का पंजाब सरकार का फैसला गैर कानूनी है।

राज्य को यह अधिकार ही नहीं है वह जीएम मक्के के परीक्षण का मंजूरी दे। उन्होंने कहा कि अंतराष्ट्रीय बीज कंपनियों के दबाव में देश के कुछ कृषि वैज्ञानिक जीएम फसलों को बढ़ावा देने में लगे हैं लेकिन जीएम फसलों से कृषि को फायदा कम और नुकसान ज्यादा होगा पंजाब में साल 2010 में अकाली-बीजेपी की सरकार ने जीएम मक्का के परीक्षणों पर कुछ किसान संगठनों के विरोध के कारण ठंडे बस्ते में डाल दिया था लेकिन पंजाब की वर्तमान कांग्रेस सरकार ने इसे मंजूरी दी है। पंजाब विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बीएस ढिल्लो ने कहा जीएम मक्का का परीक्षण इसलिए किया जा रहा है कि आने वाले समय में हम मक्का की अच्छी किस्में तैयार कर सकें।

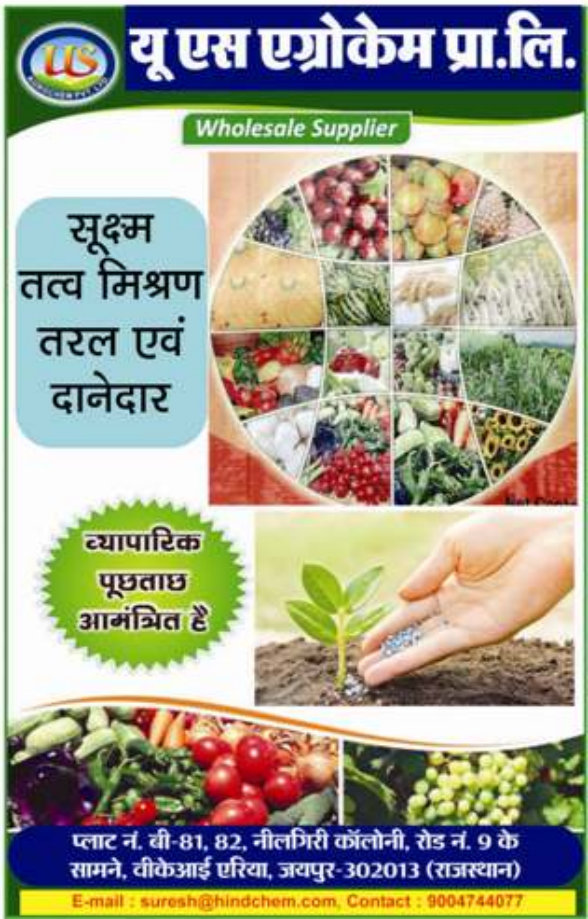

बाजरे की वैज्ञानिक तरीके से खेती

सुरेश कुमार डोटासरा, रतन लाल शर्मा, दिनेश स्वामी, पवन कुमार चौधरी,
रौनक शर्मा, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय,जोबनेर 303329

बाजरा गरीब का भोजन कहा जाता है। मोटे दाने वाली खाद्यान फसलों में बाजरे का महत्वपूर्ण स्थान है। इसकी खेती दाने व चारे दोनों के लिए की जाती है। शुष्क व कम वर्षा वाले क्षेत्रों के लिए एक महत्वपूर्ण फसल है। और यह राजस्थान की मुख्य फसल है। बाजरे का 90 प्रतिशत क्षेत्रफल राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, उतर प्रदेश, एवं हरियाणा राज्यों के अन्तर्गत आता है। बाजरे के दानों में लगभग 12.4 प्रतिशत नमी, 11.6 प्रतिशत प्रोटीन, 5.0 प्रतिशत वसा, 67.0 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट एवं 27.0 प्रतिशत लवण होते है।

खेत की तैयारी:- खेत की तैयारी फसल की समय से बुवाई सुनिश्चित करती है। खेत की तैयारी इस प्रकार करनी चाहिए कि पूर्व फसल अवशेष एवं अवांछित खरपतवार अच्छी तरह मिट्टी के नीचे दब जाये एवं मिट्टी भुरभुरी हो जाये। एक गहरी जुताई, मिट्टी पलटने वाले हल से करनी चाहिए उसके बाद 2-3 जुताई, डिस्क द्वारा की जा सकती है। खेत से अतिरिक्त पानी की निकासी के लिए खेत का समतल होना अतिआवष्यक है।

बाजरे की उन्नत प्रमुख संकर एवं संकुल किस्में: राज-171,एच.एच.बी.-67, एच.एच.बी.-60,एच.एच.बी.-216,एच.एच.बी.-226, एच.एच.बी.-234,आई.सी.एम.एच.-356, आर.एच.बी.-154,आर.एच.बी.-177, आर.एच.बी.-90, आर.एच.बी.-58, जी.एच.बी.-757, जी.एच.बी.-538, मण्डोर बाजरा कम्पोजिट-2, आर.एच.बी.-121, सी.जेड.पी.-9802, एम.एच.-169, डब्ल्यू.सी.सी.-75.

बुवाई का समय: खेत में बुवाई के समय पर्याप्त नमी होनी चाहिए। सिंचित क्षेत्रों में जुलाई के प्रथम पखवाड़े तक बाजरे की बुवाई कर देनी चाहिए। बारानी या असिंचित क्षेत्रों में मानसून की पहली वर्षा के बाद खेत में पर्याप्त नमी होने बुवाई करनी चाहिए। वर्षा में विलम्ब होने पर एच.एच.बी.-67 किस्म की बुवाई करें।

बीज की मात्रा: बीज दर प्रजाती की अंकुरण क्षमता, 1000 दानों का भार एवं पौधों की संख्या प्रति हैक्टेयर पर निर्भर करती है। बाजरे की एकल फसल के लिए 4 किलोग्राम प्रमाणित बीज प्रति हैक्टेयर के हिसाब से प्रयोग की जाती है। बीज बुवाई के तुरंत पश्चात वर्षा होने पर हल्की भूमियों में कड़ी पपड़ी बन जाती हैं। इस कारण बाजरे में अंकुरण कम होता है और कई बार तो दुबारा बुवाई करनी पड़ जाती है। इस कारण किसान को नुकसान होता है। इस समस्या से बचने के लिए कि कड़ी परत न बने इसके लिए खेत में उचित कार्बनिक खाद का उपयोग कर ही बीज की बुवाई करें।

बीजोपचार: भूमि एवं बीज जनित बीमारियों एवं कीटों की रोकथाम के लिए बीज उपचार अतिआवश्यक है। अरगट रोग के नियन्त्रण के लिए 20 प्रतिशत नमक के घोल (5 लीटर पानी में एक किलो नमक) में बीजों को 5 मिनट डूबोकर, निथार कर धोकर सूखा लें। उन क्षेत्रों में जहां डाउनी मिल्ड्यू होने की सम्भावना हो, बीज को मेटालेक्साइल (6 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज) से उपचारित करें। एजेटोबैक्टर 600 ग्राम (3 पैकेट)पी.एस.बी. कल्चर 600 ग्राम(3 पैकेट) प्रति हैक्टयर की दर से गुड़ के पानी में घोल बनाकर बीजोपचार करें। सफेद लट नियन्त्रण के लिए एक किलो बीज में 3 किलो कार्बोफ्यूरॉन 3 प्रतिषत कण मिलाकर उपचारित करके बोयें।

बुवाई की विधि: अधिक उपज प्राप्त करने के लिए बाजरे की बुवाई कतारों में करनी चाहिए। कतार से कतार की दूरी 45-60 से.मी. एवं पौधे से पौधे की दूरी 12-15 सें.मी. रखनी चाहिए। खेत में पौधों की संख्या 18 पौधे प्रति वर्ग मीटर हानी चाहिए। पानी की कमी हाने कि दशा में या सूखे कि दशा में पौधों की संख्या में उखाड़कर कमी कर दें।

खाद एवं उर्वरक प्रयोग: उर्वरकों का प्रयोग करने से पहले खेत कि मिट्टी की जाँच करा लेनी चाहिए और मिट्टी जाँच के आधार पर मृदा स्वास्थ्य कार्ड में सिफारिश की गई मात्रा के अनुसार ही उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए। बुवाई के 2-3 सप्ताह पूर्व गोबर की खाद 8-10 टन प्रति हैक्टेयर या 2.0-2.5 टन वर्मी कम्पोस्ट खेत में बिखेर कर जुताई कर देनी चाहिए। उर्वरक सिंचित एवं असिंचित क्षेत्रों के लिए अलग-अलग मात्रा में प्रयोग किये जाते है।

सिंचित क्षेत्रों के लिए: नत्रजन 80-100 कि.ग्रा., फॉस्फोरस 40-50 कि.ग्रा., एवं पोटाश 40-50 कि.ग्रा., प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग कि जा सकती है। मुख्यत: नत्रजन की आधी एवं फॉस्फेरस एवं पोटाष की पूरी मात्रा बुवाई के समय देनी चाहिए। नत्रजन की शेष मात्रा दो भागों में बुवाई के 3 सप्ताह एवं 5 सप्ताह बाद प्रयोग कर सकते है।

असिंचित क्षेत्रों के लिए: शुष्क एवं कम वर्षा वाले क्षेत्रों में नत्रजन 30-40 कि.ग्रा., फॉस्फोरस 25 कि.ग्रा., एवं पोटाश 25 कि.ग्रा., प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग कि जा सकती है।

निराई-गुड़ाई/खरपतवार नियन्त्रण: बाजरा वर्षा ऋतु की फसल होने के कारण खरपतवारों से बहुत अधिक प्रभावित होता है। फसल की अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिए समय पर खरपतवार नियन्त्रण करना अति आवश्यक हैं। अन्यथा उपज में 70 प्रतिशत तक कमी हो सकती हैं। बुवाई से 30 दिन तक खेत का खरपतवार मुक्त रखना आवश्यक है। खरपतवार नियन्त्रण के लिए पहली निराई खुरपी द्वारा बुवाई के 15 दिन बाद करनी चाहिए। इसे 15 दिन के अन्तराल पर दोहराना चाहिए। निराई सम्भव नहीं होने की स्थिति में खरपतवार नाशक एट्राजिन 0.5 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व प्रति हैक्टेयर की दर से बुवाई के तुरन्त बाद अथवा 1-2 दिन बाद 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से खरपतवारों पर नियन्त्रण पाया जा सकता है।

सिंचाई प्रबंधन: फुटान के समय, फूल आने एवं दाने बनने के समय, खेत में पर्याप्त नमी होना आवश्यक है। यदि इस अवस्था में वर्षा न हो तो सिंचाई करनी चाहिए अन्यथा उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

सल्फोहाईड्रिल रसायनों का छिड़काव: असाधारण स्थिति में या वर्षा न हो तो बाजरे में इसके प्रभाव को कम करने के लिए यूरिया का 3 प्रतिशत घोल जब पौधे 5-6 सप्ताह के हो जावें तो पर्णीय छिड़काव कर सकते है।

कीट प्रबंधन:

कातरा: कातरे की लट फसलों को अत्यधिक नुकसान पहुंचाती हैं। मानसून की वर्षा होते ही इस कीट के पतंगे निकलना शुरू हो जाते है। इन पतंगो को प्रकाश की ओर आकर्षित करके नष्ट किया जा सकता हैं। नियन्त्रण हेतु प्रकाश पाश का खेत में उपयोग कर आकर्षित करके नीचे पानी व केरोसीन मिलाकर परात में रख देनें से पतंगे इसमें गिरकर नष्ट हो जायेंगे। मिथाइल पैराथियान 2 प्रतिशत या क्यूनॉलफास 1.5 प्रतिशत चूर्ण का 25 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकाव करें। जहाँ पानी उपलब्ध हो वहाँ डाइक्लोरोवास 100 ई.सी. 300 मि.ली. प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़कें।

सफेद लट: मानसून की वर्षा होते ही इस कीट के भृंग निकलना शुरू हो जाते हैं। इन भृंगों को प्रकाश की ओर आकर्षित करके नष्ट किया जा सकता हैं। नियन्त्रण हेतु प्रकाश पाश का खेत में उपयोग कर आकर्षित करके नीचे पानी व केरोसीन मिलाकर परात में रख देनें से पतंगे इस में गिरकर नष्ट हो जायेंगे। फसल में लटों के प्रकोप की रोकथाम के लिये क्यूनॉलफॉस 5 प्रतिशत कण या कार्बोफ्यूरान 3 प्रतिशत कण 25 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से बुवाई से पूर्व कतारों में ऊर देना चाहिए तथा गर्मियों में गहरी जुताई करनी चाहिए।

तना मक्खी: इस कीट की गिडार पौधों को बढ़वार की प्रारंम्भिक अवस्था में काट देती हैं। जिससे पौधा सूख जाता है। इसके नियन्त्रण के लिए थिमेट 10 जी. को 15-20 किग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से कूड़ों में डालना चाहिए।

बीटल एवं ईयर हैड बग: मिथाइल पैराथियान 2 प्रतिशत या क्यूनॉलफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण का 25 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से भुरकाव करें।

दीमक: खेत में अच्छी तरह से सड़ी गोबर की खाद डालें तथा खड़ी फसल में दीमक का प्रकोप होने पर क्लारोपाइरीफॉस 4 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से सिंचाई के साथ देना चाहिए।

रोग प्रबंधन:

हरित बाली रोग (जागिया): बीज को उपचारित करके ही बुवाई करें। रोग दिखाई देने पर बुवाई के 21 दिन बाद मैन्काजेब 2 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़के तथा रोग रोधी किस्में डब्ल्यू.सी.सी.-75, राज-171, आर.एच.बी.-90, एच.एच.बी.-67, एम.एच.-169 बोयें एवं रोगग्रसित पौधों को खेत से निकालकर नष्ट कर देवें।

अर्गट: यह बाजरे का अति भंयकर रोग है तथा इसे चेपा या चपका एवं गूदिंया के नाम से जाना जाता है। इस रोग का प्रभाव फसल में फूल आते समय होता है। रोगग्रसित फूलों में से हल्के गुलाबी रंग का गाढ़ा तथा चिपचिपा शहद जैसा तरल पदार्थ निकलता है। रोगग्रसित पौधों को खेत से निकालकर नष्ट कर देवें। अधिक प्रकोप होने पर एक हैक्टेयर में 2 किलोग्राम मैंकाजेब 700-800 लीटर पानी में घोलकर छिड़कें। अर्गट रोग के लिए रोग रोधी किस्मों जैसे- आई. सी. टी. पी. 8203 , आई. सी. एम.वी.155 का प्रयोग करना चाहिए। बीज को नमक के घोल में उपचारित कर काम में लेवें।

ध्यान दें: अर्गट ग्रसित अनाज विषैला होने के कारण मनुष्य व पशु दोनों के लिए घातक होता है।

कटाई: फसल पकने के समय दाने गहरे काले रंग के हो जाते है। सामान्यत: बाजरे की फसल 75-85 दिन के अन्दर पक जाती है। जब दानों में नमी की मात्रा 20 प्रतिशत हो तभी बालियां पौधे से अलग करनी चाहिए।

उपज व भण्डारण: फसल की बालियों को मंडाई से पूर्व अच्छी तरह सूखा लेना चाहिए। थ्रेसर से निकालने के पश्चात दानों को साफ कर एवं सुखाकर उनका भण्डारण किया जा सकता हैं। बाजरे के भण्डारण के समय दानों में नमी की मात्रा 12-14 प्रतिशत होनी चाहिए। किस्म के अनुसार बाजरे की औसत उपज 20-35 क्विंटल दाना एवं 70-100 क्विंटल कड़बी/चारा प्रति हैक्टेयर प्राप्त की जा सकती है।

पुदीना उगायें अधिक लाभ कमायें

सरोज चौधरी, विषय विशेषज्ञ (प्रसार शिक्षा)
कृषि विज्ञान केंद्र, भावनगर (गुजरात)

पुदीना एक बारह मासी खुशबुदार पौधा है। पुदीने की खेती मुख्यत: उनकी हरी, ताजा खुशबूदार पत्तियों के लिये की जाती है। गांव-घरों में पनियारी के पास जहां पानी नियमित रूप से लगता है पुदीना लगाया जा सकता है। शहरों में लोग अपनी छतों पर पुदीनें को गमलों में लगाकर रखते हैं तो कहीं महानगरों में कई लोग अपनी खिड़कियों तथा रोशनदानों में पुदीना लगे गमले रखते है। जिससे उनकी पुदीनें की हरी ताजी पत्तियां भी मिल जाती है तथा घरों में हवा के साथ पुदीने की भिनी-भिनी खुशबू भी फैल जाती है। पुदीने का नाम सुनकर ही हम सबके मुंह में पानी भर आता है। पुदीने का आम तौर पर हम चटनी बनाने के लिये उपयोग करते है, पर इसके साथ-साथ पुदीने के अन्य औषधीय उपयोग भी है। पुदीने से निकाले जाने वाले सुगंधित तेल व अन्य घटकों का उपयोग सौन्दर्य प्रसाधनों, विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों को सुगंधित करने, टॉफी तथा च्वींगम बनाने, पान के मसालों को सुगंधित बनाने, खांसी-जुकाम सर दर्द की औषधियां बनाने, उच्चस्तर की शराब को सुगंधित बनाने तथा ग्रीष्मकाल के दौरान लू से बचने के पेय पदार्थ बनाने में पुदीना बहुत उपयोगी होता है। आज भारत वर्ष पुदीना उत्पादन के क्षेत्र में सबसे आगे है। पोदीना उत्पादन की उन्नत तकनीक को अपनाकर खेती आसानी से कर सके।

जलवायु: पुदीने की खेती कई तरह के जलवायु में की जा सकती है। यह शीतोष्ण एवं समशीतोष्ण जलवायु में आसानी से लगाया जा सकता है। इसे सिंचित तथा असिंचित दोनों दशाओं में लगाया जा सकता है। परंतु सिंचित अवस्था में इसकी उपज असिंचित की अपेक्षा ज्यादा प्राप्त होती है।

भूमि/ मिट्टी: सिंचित फसल के रूप में पुदीना लगभग सभी प्रकार की मृदाओं में उगाया जा सकता है। बशर्ते उसमें जैविक खाद का उपयोग उपयुक्त मात्रा में किया गया हो उचित जल निकास वाली रेतीली दोमट मिट्टी पुदीना की खेती के लिये सर्वोत्तम मानी जातीहै।

पुदीने के प्रकार:

आज कल पुदीने के प्रमुखत: दो प्रजातियां प्रचलन में है

➪मेन्था पिपरीटा (विलायती पुदीना)
➪मेन्था आर्वेन्सिस (जापानी पुदीना)

भारत में सामान्यत: उगायी जाने वाली प्रजाती ''जापानी पुदीना'' है। यह मुख्यत: उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा राजस्थान में उगायी जाती है।

उन्नत किस्में: एम.ए.एस.1, कोसी, कुशाल, सक्ष्म, गौमती (एच.वाई.77), शिवालिक, हिमालय, एल-11813, संकर 77, ई.सी.41911 आदि मुख्यतया उगायी जाने वाली पुदीने की उन्नत किस्में है।

खाद एवं उर्वरक: प्रति हैक्टेयर पुदीने की खेती के लिए 200-500 क्विंटल गोबर की खाद या कम्पोस्ट खाद तथा 120-135: 50-60 : 50-60 किलोग्राम एन.पी.के. का उपयोग करना चाहिए।

पौध रोपण/ बुवाई: पुदीने की फसल के लिये एक हैक्टेयर क्षेत्र के लिये लगभग 200-250 किलोग्राम जड़ों की आवश्यकता होती है। पुदीने की रोपाई का उपयुक्त समय जनवरी-फरवरी माना जाता है परंतु अप्रेल मई में भी इसकी रोपाई की जा सकती है। अगर रोपाई फरवरी के महीने में की जाये तो मात्र 2-3 सप्ताहों में इनकी जडें फूट आती है ओर आसानी से जल्दी ही पूरा पौधा फैल जाता हैं। पुदीना लगाने के लिए इसकी मिट्टी के अंदर की भुस्तारिकाओं को 10-15 से.मी. शाखाओं को जमीन में दबा दिया जाता है। रोपण के दौरान यह अवश्य ध्यान रखे कि भुस्तारिकायें जमीन में 5 से.मी. से अधिक गहरी ना चली जाये।

सिंचाई एवं जल निकास: शुष्क क्षेत्रों में उगाये जाने वाले पुदीना से समय-समय पर तथा उचित मात्रा में सिंचाई की जानी चाहिए क्योंकि पत्तियों की उपज तथा तेल की गुणवत्ता के लिये सिंचाई का बहुत महत्व है। रोपाई के बाद हर 10-12 दिनों के अंतराल के बाद सिंचाई करनी चाहिए। बरसात के दिनों में इसके लिये खेतों में जल निकास की अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए अन्यथा पौधा अधिक पानी की मात्रा के कारण नष्ट हो जाता है।

खरपतवार नियंत्रण: पुदीने की फसल में खरपतवार के नियंत्रण के लिये कुल तीन बार निराई की जानी चाहिए। प्रथम निराई रोपण के करीब एक माह बाद दूसरी करीब दो माह बाद तथा तीसरी कटाई के करीब 15 दिनों बाद की जानी चाहिये। खरपतवार नियंत्रण के लिये खरपतवार नाशी सामान का उपयोग भी किया जा सकता है।

कीट एवं रोग प्रबंधन

➪रोयेदार सुण्डी तथा पत्तों में लगनें वाले कीट के प्रकोप की रोकथाम के लिये मैलाथियॉन 50 ई.सी. 7 मिली प्रति लीटर पानी की दर से छिडकाव भी इस कीट के नियत्रंण के लिये उपयुक्त है।

➪कटुआ कीट (कटवर्म) तथा दीमक की रोकथाम के लिये अंतिम जुताई के समय फॉरेट दाने दार 10 जी रसायन 20 किग्राप्रति हैक्टेयर की दरसे खेत की मिट्टी में मिलाये।

➪भुस्तारी सडन तथा जड़ गलन रोगों की रोकथाम के लिये रोपण के समय भुस्वारिका ओंको केप्टान (25 प्रतिशत) अथवा बेनलेट (0.1 प्रतिशत) से उपचारित करना चाहिए।

➪रतुआ तथा पत्तों पर धब्बा रोगों की रोकथाम के लिये ब्लीटॉक्स (3 प्रतिशत) अथवा डाइथेन एम-45 (0.2 प्रतिशत) का छिड़काव करें।

तुड़ाई/ कटाई एवं उपज: पुदीनें की प्रथम कटाई रोपण के करीब 100-120 दिनों बाद (जून के महीने में) की जाती है। दूसरी कटाई पहली कटाई के 70-80 दिनों बाद (अक्टूबर के महीने में) की जानी चाहिए। अगर इसकी कटाई सही समय पर ना की जाये तो इसकी उपज तथा तेल की गुणवत्ता पर विपरीत प्रभाव पडता है।

एक साल में दो बार कटाई के फलस्वरूप एक हैक्टेयर से करीब 20-25 टन पुदीनें पत्तियों की उपज होती है, जिनसे प्रति वर्ष करीब 250 कि.ग्रा. तेल प्राप्त होता है।

खेतों में मेढ़ बांध जल संरक्षण करें किसान: कृषि वैज्ञानिक

हजारीबाग (विसं)। हजारीबाग में हॉली क्रॉस कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ एसएन चौधरी ने किसानों को धान की खेती से संबंधित कई तरह की सलाह दी। उन्होंने कहा कि बारिश से जो थोड़ा पानी खेतों में जमा हुआ है, उसे मेढ़ बनाकर संरक्षित कर लें। ताकि खेतों में बर्षा का पानी ठहर सके। कारण पूर्व में कम वर्षा होने के कारण खेत की मिट्टी पानी से संतृप्त नहीं हुई है। खेतों में जल जमाव के लिए मेढ़ की मरम्मत जरूरी है। मकई और दलहन खेत में जल जमाव हुआ तो ढलान की ओर नाली बनाकर अतिरिक्त पानी का निकास की व्यवस्था करें। कृषि वैज्ञानिक ने कहा कि जो कृषक खेत में घास या हरि खाद का प्रयोग किए हैं, तो उसे कादो करने के साथ जोत दें। यदि किसान डीएपी का प्रयोग कर रहे हैं तो प्रति एकड़ 80 किलो डीएपी, उसमें 17 किलो यूरिया और 27 किलो पोटाश मिलाकर खेतों में डाले।

सस्ती और अच्छी वर्मी कंपोस्ट बनाने के ये हैं सबसे आसान तरीके

इंदौर (विसं)। किसान भाइयों को अपनी खेती में कम लागत से अच्छी फसल की पैदावार के लिए जैविक खेती करनी चाहिए जिससे उनकी फसल की लागत भी कम हो जाएगी और उत्पादन भी अधिक होगा। किसान अपनी फसल में रासायनिक खाद का प्रयोग करते हैं जो कि जैविक खाद की तुलना में काफी महंगा पड़ता है। कुछ आसान विधियों से वर्मी कम्पोस्ट घर पर ही बना सकते हैं। गाय के गोबर को पोषण का सर्वाधिक श्रेष्ठ माना जाता हैं जिसमे पौधों के लिए आवश्यक सभी सूक्ष्म तत्व संतुलित मात्रा में उपलब्ध रहते हैं। इन सूक्ष्म तत्वों को पौधे या फसलें बड़ी आसानी से अवशोषित कर लेती हैं। गोबर में उपस्थित सूक्ष्मजीव मृदा में उपस्थित जैव-भार के विघटन का भी कार्य करते हैं। खाद बनाने की विधियां प्रचलन में हैं इनमे से कम्पोस्ट, नाडेप या वर्मी कम्पोस्ट प्रमुख हैं।

प्रचलन में है वर्मी कम्पोस्ट विधि: वर्मी कम्पोस्ट विधि का प्रचलन अन्य विधियों की तुलना में कही अधिक है। इस विधि में खाद का निर्माण अपेक्षाकृत कम समय में हो जाता है। इस विधि से प्राप्त खाद की गुणवत्ता भी अधिक होती है। वर्मी कम्पोस्ट विधि से प्राप्त खाद का भण्डारण भी ज्यादा किया जा सकता है।

पेड़ विधि: पेड़ के चारों ओर गोबर गोलाई में डाला जाता है। हर रोज गोबर को डालकर धीरे-धीरे इस गोल चक्र को पूरा किया जाता है। पहली बार प्रक्रिया शुरू करते समय गोबर के ढेर में थोड़े से केंचुए डाल कर गोबर को जूट के बोरे से ढक दिया जाता है। नमी के लिए बोर के ऊपर समय-समय पर पानी का छिड़काव किया जाता है। केंचुए डाले गए गोबर को खाते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ते जाते हैं और अपने पीछे वर्मी कम्पोस्ट बना कर छोड़ते जाते हैं।

सूचना

पाक्षिक समाचार पत्र सृष्टि एग्रो में प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों व लेखों में समाविष्ट सभी बातों की जांच-परख कर पाना संभव नहीं है विज्ञापनों में अपने उत्पादनों अथवा अपनी सेवाओं के बारे में विज्ञापनदाता जो दावे करते हैं, सृष्टि एग्रो समाचार पत्र उसकी कोई गारंटी नहीं लेता।
विज्ञापनों में किए गए दावों की पूर्ति यदि विज्ञापनदाता द्वारा नहीं होती है तो उसके लिए पाक्षिक सृष्टि एग्रो समाचार पत्र समूह के मुद्रक, सम्पादक, प्रकाशक व मालिक किसी भी रूप में जवाबदेह नहीं होंगे, कृपया इसे ध्यान में रखें। अतः हम पाठकों से अनुरोध करते हैं विज्ञापन में उल्लेखित बातों के संदर्भ में कोई भी करार करने से पूर्व उसके बारे में आवश्यक छानबीन कर लें।

DIRECT IMPORT FOR YOUR FERTILIZER/CHEMICALS

- ZINK EDTA/COPPER
- EDTA/FF/EDTA
- 100% WATER SOLUBLE
- FERTILIZER (NPK)
- HUMIC ACID
- SEAWEED EXTRACT
- AMINO ACID
- POTASSIUM HUMATE
- FULVIC ACID
- EDDHA
- NATCA
- BRASSINOLIDE
- DAP
- SODA ASH
- SODIUM SULPHIDE
- AMONIUM CLORIDE
- SODIUM BICARBONATE
- CALCIUM CARBIDE
- PHOSPHORIC ACID
- TRI SODIUM PHOSPHATE
- CITRIC ACID
- STPP

ALL KIND OF INORGANIC
ORGANIC CHEMICALS
CONTACT NO. 022-6710-3722

दमदारी के साथ शुरू हुआ चना वायदा का कारोबार

मुंबई (कासं)। करीब एक साल के बाद चना वायदा कारोबार दोबारा शुरू हो गया। पहले दिन 91 करोड़ रुपये मूल्य के 17,380 टन चनों का सौदा हुआ। खड़ा सौदा (ओपन इंटरेस्ट) 6,990 टन का रहा। चना वायदा में पिछले साल दाल की कीमतों में भारी बढ़ोतरी के कारण रोक लगी दी गई थी। चने की रिकॉर्ड पैदावार को देखते हुए बाजार नियामक सेबी ने मंजूरी दी है। एनसीडीईएक्स पर सितंबर, अक्टूबर और नवंबर अनुबंध में वायदा कारोबार हुआ। चना सितंबर अनुबंध 5,302 रुपये में खुला और बढ़त के साथ 5,330 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ। इसी तरह अक्टूबर और नवंबर अनुबंध भी बढ़त के साथ 5,370 रुपये और 5,390 रुपये पर बंद हुए। एनसीडीईएक्स के प्रबंध निदेशक एवं सीईओ समीर शाह ने कहा कि चना वायदा से लाखों किसानों को फायदा होगा। वायदा से किसानों को अग्रिम मूल्य संकेत के साथ सही भाव का पता चलेगा। राजस्थान, बिहार, मध्य प्रदेश के दस हजार से अधिक किसानों ने वायदा कारोबार शुरू करने के लिए सरकार के पास आवेदन किया था। उम्मीद है कि एक बार फिर से किसान वायदा मंच में शामिल होकर अपने जोखिम को कम करेंगे। राजस्थान के बीकानेर को बेस डिलिवरी सेंटर और मध्य प्रदेश में गंज बसोदा को अतिरिक्त डिलिवरी सेंटर बनाया गया है। एनसीडीईएक्स ने कहा है कि कई अनुभवों से साफ हो गया है कि वायदा कारोबार पर प्रतिबंध लगाने से कीमतों की घट-बढ़ पर असर नहीं पड़ता। जुलाई 2016 में चने के वायदा कारोबार के निलंबन के बाद मई महीने में हाजिर बाजार में चना 52 फीसदी ऊपर चढ़ गया। अक्टूबर में चने का भाव 31 फीसदी बढ़ा। आपूर्ति में सुधार के बाद जून 2017 में कीमतों में 58 फीसदी की गिरावट आई। इससे साफ होता है कि बाजार में कीमतें मांग और आपूर्ति से चलती हैं। वायदा बाजार किसानों, कारोबारियों और सरकार के लिए फायदेमंद कारोबार है।

पंजाब में कपास पर कीट हमले की चेतावनी

जालंधर (विसं)। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (पीएयू) के कीटविज्ञानियों ने पंजाब के कपास किसानों को कपास के पौधे में कीट लगने की चेतावनी दी है। पंजाब के कपास क्षेत्र में पीएयू और राज्य कृषि विभाग कीटों के हमले का जायजा लेने के लिए वृहद स्तर पर सर्वेक्षण कर रहा है। सर्वेक्षण के मुताबिक पौधों का रस चूसने वाले कीट जैसिड को कुछ जगहों के खेतों में देखा गया है।

किसानों को चेतावनी देते हुए पीएयू के कीटविज्ञान विभाग के प्रमुख पी के छुनेजा ने कहा कि इन कीटों के प्रजनन में गर्म और उमस वाला मौसम अनुकूल होता है। उनका कहना है, यह कीट जुलाई-अगस्त मध्य तक फसलों पर सक्रिय रहता है और ये पत्तों के रस चूसते हैं नतीजतन इसका रंग पीला पड़ने लगता है और पत्तियां भी मुड़ने लगती हैं। बाद में संक्रमित पत्तियां चमकदार हो जाती हैं। उनका कहना है कि 50 फीसदी पौधों के ऊपरी हिस्से की पत्तियां पीली दिखती हैं ऐसे में उलाला फ्लोनीकैमिड, ओशीन, एक्टारा, एक्सट्रा सुपर, डोटारा और थॉमसन स्प्रे किया जा सकता है।

उर्वरक कंपनियां बढ़ाएंगी पोटाश के दाम

मुंबई (कासं)। सरकार ने बीते हफ्ते चालू वित्त वर्ष 2017-18 के लिए पोटाश सब्सिडी में 20 फीसद कटौती की थी। इसे देखते हुए घरेलू उर्वरक कंपनियां जल्द पोटाश के दामों को बढ़ाने की तैयारी में हैं। इसकी ऊंची कीमतों से मांग के प्रभावित होने की आशंका है। इसने बड़े ग्लोबल आपूर्तिकर्ताओं के लिए चिंता बढ़ा दी है। भारत दुनिया में पोटाश के सबसे बड़े आयातकों में से एक है। सब्सिडी में कटौती के कारण भारतीय कंपनियां अंतरराष्ट्रीय आपूर्तिकर्ताओं के साथ वार्षिक आयात कॉन्ट्रैक्ट में कीमतों को लेकर मोलतोल की योजना भी बना रही हैं। घरेलू फर्में जिन बड़ी ग्लोबल कंपनियों से पोटाश खरीदती हैं, उनमें उरलाकली, पोटाश कॉर्प ऑफ सस्केचेवान, एग्रियम इंक, मोजैक, केप्लसएस, अरब पोटाश और इजरायल केमिकल्स शामिल हैं। भारत और चीन जिन कॉन्ट्रैक्ट पर हस्ताक्षर करते हैं, उन्हें अंतरराष्ट्रीय बेंचमार्क माना जाता है। मलेशिया और इंडोनेशिया जैसे अन्य पोटाश खरीदार इन पर करीब से नजर रखते हैं। बीते हफ्ते कैबिनेट ने पोटाश सब्सिडी में 20 फीसद कटौती की थी। भारत में सालाना करीब 40 लाख टन पोटाश की खपत होती है। अपनी जरूरत को पूरा करने के लिए वह आयात पर निर्भर रहता है। लेकिन ऊंची कीमतों के कारण इस बात की आशंका है कि देश के 26.3 करोड़ किसान इसके इस्तेमाल को सीमित करें। इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर को-ऑपरेटिव (इफको) के एमडी यूएस अवस्थी ने कहा कि सब्सिडी में कटौती के मद्देनजर आपूर्तिकर्ताओं के साथ मोलतोल किया जाएगा ताकि भारतीय किसानों के लिए कम से कम कीमतों पर पोटाश को खरीदा जा सके। वित्त वर्ष 2017-18 में भारतीय पोटाश आयात की जरूरत में कमी आने की संभावना है। इसकी एक वजह यह भी है कि बीते साल का काफी स्टॉक बचा हुआ है।

UDIT OVERSEAS PVT. LTD.

N.P.K. 100%WATER SOLUBLE FERTILIZER

- 19.19.19.
- 13.0.45(POTASSIUM NITRATE)
- 12.61.00 (MAP)
- 0.50.34 (MKP)
- 0.0.50 (SOP)
- CALCIUM NITRATE
- SRUSHTI HIZINC (MICRONUTRIENT MIXTURE)
- ZINC EDTA 12%
- ZINC SULPHATE 33%
- FERROUS EDTA 12%
- ZINC 21%
- FERROUS 19%
- MAGNESIUM
- BORON 20%
- COPPER SULPHATE 24%
- SULPHUR 90% WG

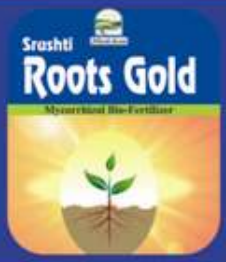

BIO FERTILIZERS

- MYCORRHIZA (ROOTS GOLD)
- AZOTOBACTOR
- RHIZOBIUM
- AZOSPIRILLUM
- PHOSPHATIC SOLUBILISING BACTERIA (PHOS UP)
- POTTASIUM MOBILIZING (POTA RISE)

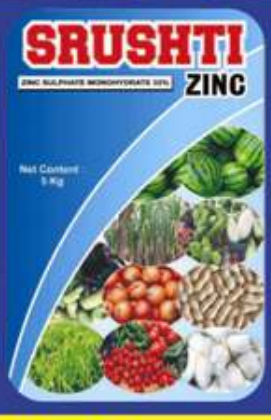

WELCOME INQUIRY Contact : 7728897567

137, Industrial Area Dehra, Tehsil Chomu, Dist, Jaipur

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक - सुरेश जी. शर्मा की ओर से सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, शर्मा इंडस्ट्रीयल इस्टेट, गोरेगांव (पूर्व), मुंबई-63 से मुद्रित किया और 307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड मालाड (प), मुंबई-400064 यहां से प्रकाशित किया। सम्पादक : सुरेश जी. शर्मा, Contace Detail : Tel. 022-66998360/61, Fax : 022-66450908
E-mail : info@srushtiagronews.com, website : www.srushtiagronews.com RNI No. MAHHIN/2013/49425